PHILOSOPHY

Hons. ~~Exam~~ ~~Pt~~, Paper VII (~~Part~~-III)

Equality (समानता)

Dr. S. K. Singh
Mob.-9431449951

→ सामाजिक-राजनीतिक दर्शन के अन्तर्गत आधुनिक समाज के एक महत्वपूर्ण मूल्य एवं राजनीतिक आदर्श के रूप में समानता की अवधारणा प्रतिष्ठित है।

→ समानता का अर्थ समरूपता (Uniformity) नहीं है अर्थात् योग्यता एवं आवश्यकता को ध्यान में रखे बिना प्रत्येक व्यक्ति के साथ समान व्यवहार करना समानता नहीं है। समरूपता केवल इसी अर्थ में है कि प्रत्येक मनुष्य मानवता के दृष्टिकोण से समान है। मानवीय प्रतिष्ठा और अधिकारों की दृष्टि से सभी मनुष्य समान हैं।

→ समानता का वास्तविक अर्थ है - कृत्रिम, अतार्किक एवं अमानवीय विभेदों को समाप्त करना। विभेद दो प्रकार के होते हैं - (i) प्राकृतिक या जैविकीय ~~तथा (ii) परम्परागत या सामाजिक-सांस्कृतिक।~~ विभेद; जैसे - व्यक्तियों के रंग-रूप में अन्तर, शारीरिक बनावट में अन्तर आदि तथा (ii) परम्परागत या सामाजिक-सांस्कृतिक विभेद; जैसे - नस्ल-भेद, जाति-भेद, लिंग-भेद, प्रान्त आधारित भेद आदि। प्राकृतिक विभेद तो प्रकृतिजन्य है अतः इसे समाप्त नहीं किया जा सकता किन्तु परम्परागत विभेद तो वैधा विभेद है जो अवसरों की समानता होने पर भी किसी समूह या वर्ग द्वारा दूसरे समूह का शोषण करने के कारण उत्पन्न होता है। अतः इन समाज-जनित विभेद को समाप्त करना ही 'समानता' का तात्पर्य है।

→ समानता का सही अर्थ समाज के सभी व्यक्तियों को समान अधिकारों की प्राप्ति और विशेषाधिकार का उन्मूलन है। समाज में किसी भी व्यक्ति को वंश, लिंग, जन्म-स्थान, धर्म आदि के आधार पर विशेष सुविधाएँ या विशेष अधिकार नहीं होना चाहिये।

→ समानता का अर्थ सभी के ~~लिये~~ समुचित अवसर का मार्ग प्रशस्त करना है। राज्य और समाज का यह कर्तव्य होना चाहिये कि सभी व्यक्तियों को वंश, लिंग, जन्म-स्थान, धर्म आदि के आधार पर कुछ विशेष ~~सुविधा~~ सुविधाएँ या विशेष अधिकार नहीं होने चाहिये।

→ अतः समानता का तात्पर्य मुख्यतः सामाजिक वैषम्य द्वारा उत्पन्न असमानता को दूर करने से है। इसका उद्देश्य लोगों के व्यक्तित्व के विकास हेतु समान अवसर प्रदान करना ~~है~~ है जिससे असमानता का अन्त संभव हो सके जिसका

मूल कारण सामाजिक वैषम्य है।

→ समानता का विचार सामाजिक परिवर्तन की माँग करता है अर्थात् सामाजिक विषमताओं को दूर करने हेतु सामाजिक परिवर्तन की माँग समानता का अनिवार्य पक्ष है।

→ समानता का घनिष्ठ संबंध स्वतंत्रता, न्याय, कानून आदि से है।

→ सामाजिक न्याय के आदर्श की पूर्ति में समानता एक आवश्यक शर्त है।

→ समानता एक बदलती अवधारणा है जो समय और देश की ~~आवश्यकता~~ आवश्यकताओं में परिवर्तन के साथ अपने अर्थ में परिवर्तन करता है।

→ समानता एक लोकतांत्रिक आदर्श है, जिसमें ~~वि~~ विविध प्रकार की समानताएँ निहित हैं। जैसे - राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक आदि।

→ समानता के दो रूप हैं - (i) ~~नका~~ नकारात्मक (Negative) तथा
(ii) सकारात्मक (Positive)।

→ नकारात्मक समानता का आशय है - उन सभी विशेषाधिकारों का अन्त जो धर्म, जाति, वंश, लिंग आदि के आधार पर समाज में कुछ विशिष्ट व्यक्तियों और वर्गों को प्राप्त होते हैं। इस सन्दर्भ में उपयोगितावादी दार्शनिक बेंथम का कथन है कि 'प्रत्येक की गिनती एक है, एक से अधिक कोई भी नहीं। वस्तुतः समाज में किसी भी व्यक्ति या वर्ग को दूसरों की तुलना में कोई विशेष अधिकार तब तक नहीं दिया जाना चाहिये जब तक कि उसका पर्याप्त एवं युक्तिसंगत आधार न हो।

→ सकारात्मक समानता से ~~तात्पर्य~~ अभिप्राय है कि प्रत्येक व्यक्ति को बिना किसी भेद-भाव के विकास के समान अवसर प्रदान किया जाय।

→ समानता की अवधारणा में प्रायः ~~अब~~ यह माना जाता है कि पहले तो सभी मनुष्यों की आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्ति की जाय और उसके बाद प्रत्येक व्यक्ति को उसकी योग्यता, गुणों तथा सामाजिक कार्यों के आधार पर अतिरिक्त सुविधाएँ उपलब्ध करायी जाय। ~~इस~~

→ इस प्रकार समानता का सकारात्मक पक्ष मनुष्य को न्यूनतम आवश्यकताएँ उपलब्ध कराने तक तो राज्य के पूर्ण हस्तक्षेप का समर्थन करता है, परन्तु एक बार समानता की स्थापना के बाद यह दृष्टिकोण मनुष्य को उसकी योग्यता, गुण तथा क्षमता के आधार पर अतिरिक्त सुविधाएँ प्रदान करने के पक्ष में है।

Scanned with CamScanner